

① प्रस्तावना के 'संप्रभुता' के आदर्श और भारत की अर्थव्यवस्था और राजनीति में बढ़ती वैश्वीकरण की प्रवृत्ति के बीच संबंध का आलोचनात्मक परीक्षण करें। (8marks)

भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सन्दर्भित 'संप्रभुता' जिसका तात्पर्य राज्य की उस सर्वोच्च शक्ति से है जो उसे आन्तरिक व बाह्य आगामी में दूरी स्वतंत्रता प्रदान करती है।

प्रस्तावना के 'संप्रभुता' के आदर्श और भारत की अर्थव्यवस्था और राजनीति में बढ़ती वैश्वीकरण की प्रवृत्ति के बीच संबंध

सकारात्मक संवैधानिक प्रमाण



अर्थव्यवस्था

राजनीति

① भारत का विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था के सफलते में उभरना

① वैश्विक संगठनों में शीर्ष नेतृत्व कर्त्ता के रूप में उभरना

② वैश्विक प्रवास में सुगमता
उदाहरण: WB की रेसिटेंस रिपोर्ट
में भारत प्रथम

उदाहरण: UN में भारत की एथानोरिक सिफारिश

③ FDI के प्रभुत्व
आर्थिक जटिलता के
विषय में

उन्नाणियों व उद्योग भ्राता
के अनुसार 2024-25 के
FDI के द्वितीय डॉलर

② रूप-सुकृत सुहृद आदि
में भारत की वैधिकता
की

③ लोकल स्टार्ट की प्रभुत्व
नेटवर्किंग के क्षेत्र में

नकारात्मक प्रभाव

① विश्व के संगठनों का आर्थिक गतिविधियों के
हस्तक्षेप

उदाहरण में WTO का भारत की MSP पर व्यक्ति पर
आवेदन

② देश की राजनीति के अन्तर्बोधीय हस्तक्षेप

उदाहरण में अम्मूरश्मीर, पंजाब आदि भागों के
क्षेत्रों, पाकिस्तान जैसे देशों का व्यापार

③ दाया सुरक्षा सम्बन्धी संकेतन

उदाहरण में अमेरिका जैसी देशों का
दाया के साथ वैड्याद

④ भारत की अन्तर्बोधीय सीमा विवाद

उदाहरण में नेपाल के साथ छाता-पानी विवाद
भद्रदाख-चीन विवाद आदि।

उपर्युक्त फ्रीडम के बावजूद 'प्रस्तावना'

में वर्णित 'संप्रभुता' के आदर्श के भारत की

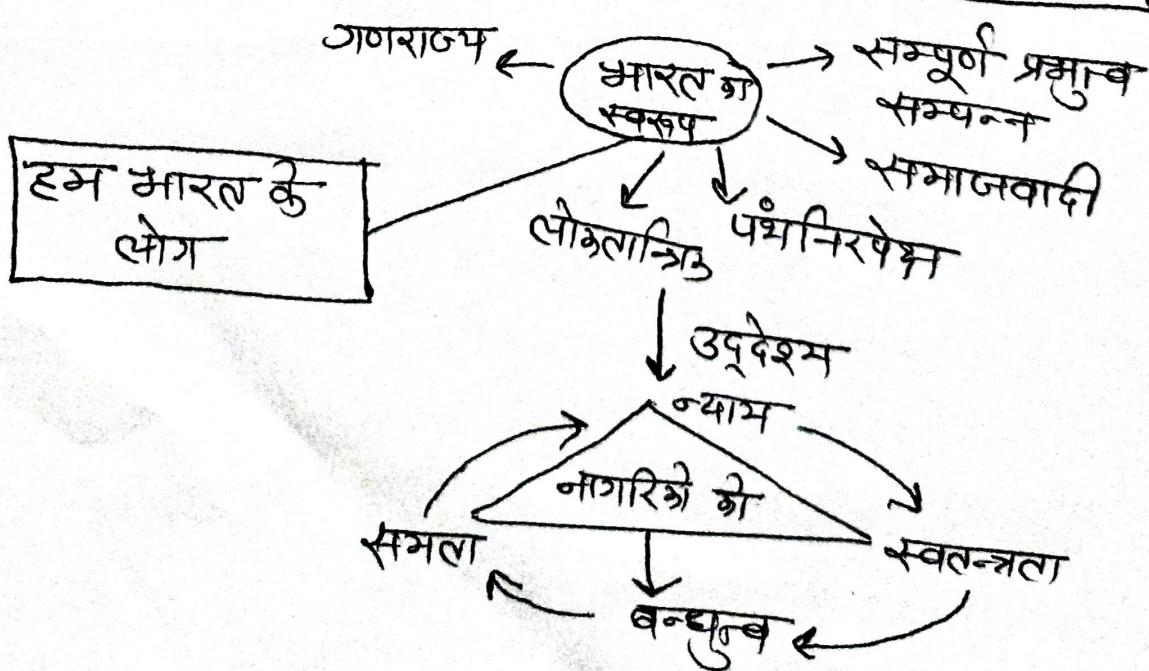
वैशिष्ट्य परस पर विश्व के सबसे बड़े
लोकतान्त्रिक, संप्रभु राष्ट्र के रूप में उभारा
है जो विश्व में नए भीतिमान रूचने के
लिए अग्रसर है।

(2)

प्रस्तावना में उल्लिखित आदर्श - न्याय, स्वतंत्रता समता और बहुमत - एक दूसरे पर निर्भर है। भारत में इन आदर्शों की प्राप्ति की सीमा का आखोचनात्मक अन्त्योग्यन करें।
(38 marks)

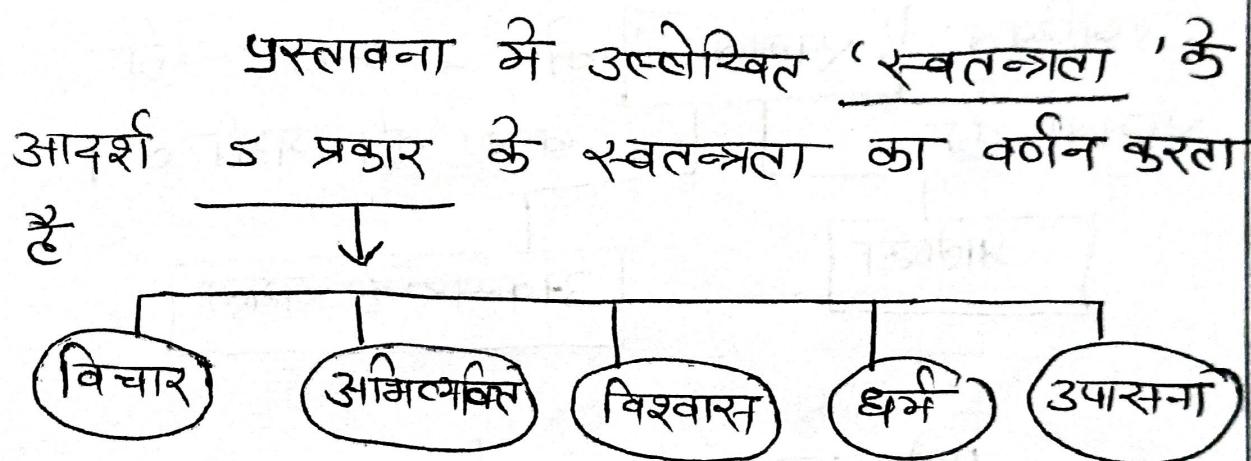
भारतीय संविधान के अधिन अंग के ऐसे वर्णित 'प्रस्तावना' संविधान के प्रमुख आदर्श उल्लेखनीय - न्याय, स्वतंत्रता, समता व बहुमत की प्रतिविचित्रता करती है जिसका उद्देश्य नागरिकों की प्रतिष्ठा व जरिमा की स्थापित कर उच्च मानकीय मानवीय आदर्शों की प्राप्त करना है।

प्रस्तावना में उल्लिखित आदर्श एक-दूसरे पर निर्भर करते ?



व्यक्ति की स्वतन्त्रता के आदर्श प्राप्ति में सहायता प्रदान करता है।

(उदाहरण) आर्थिक सूपर से अक्षम व्यक्ति शिक्षा के अधिकार (अनुच्छेद 21) व श्रीजगार चयन वा अधिकार (अनुच्छेद 19(1)(g)) के अधिकार से वंचित रह जायेगा जो प्रस्तावना के 'स्वतन्त्रता' के आदर्श प्राप्ति के बाबत सिहंद होगा।



सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यापक द्वारा 'कल्याणकारी राज्य' की मुभिग्न द्वारा 'सकारात्मक स्वतन्त्रता' के भाव्यम से स्वतंत्रता के व्यक्ति की स्वतंत्रता की विविधता करने हेतु 'स्ट्रेटफार्म' प्रकार अवसर की समता प्रदान करता है।

समता जहाँ व्यक्तियों की समान अधिकार व अवसर प्रदान किये जाते हैं

चाहे वह किसी भी आर्थिक व सामाजिक पुष्टिशूलित से हो।

(उदाह) शिक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 21) व रोजगार चयन के अधिकार (अनुच्छेद 19) अंकित की 'आर्थिक असमानता' के दूर कर समान सामाजिक प्रशिक्षित प्राप्त करने में सहायता करता है। प्रस्तावना के उल्लेखित [समता] में 2 प्रकार की समता की

```
graph TD; A[समता] --> B[प्रतिष्ठा]; A --> C[अवसर की समता]
```

प्रतिष्ठा व अवसर की समता समाज में प्रेम व सद्ब्याव की भावना का प्रसार करता है जिससे [बंधुत्व] की भावना बढ़ती है। बंधुत्व जिसके अन्तर्गत प्रत्येक समुदायों में एक - दुसरे के सम्मान व एकता की भावना का प्रसार होता है।

(उदाह) प्रतिष्ठा व अवसर की समता के आहयम से जाति, सिंग, धर्म आदि से अर उठकर 'भोजन का सम्मान' की

अवधारणा को वस्तु विषयता है जो असंतोष की भावना की समाप्त कर एक-दुसरे के समान की भावना को वस्तु प्रदान कर विद्युत की भावना बज़बूत करता है।

इस प्रकार प्रस्तावना में वर्णित व्याय, श्वेत-श्वेत, समला और विद्युत के आदर्श परस्पर एक-दुसरे पर निर्भर हैं जो स्वीकारनिक गुणों व आदर्शों की प्राप्त करने के सिथे **आधारबुत संभाल** की भाँति कार्य करते हैं।

भारत में इन आदर्शों की प्राप्ति के व्याप्त सीमाएं

① व्याय की प्राप्ति में व्याप्त सीमाएं

① न्यायिक विसंव उदाहरण में $\frac{60\%}{\text{से अधिक भाग्य से अंतर द्राप्त}}$

② अर्थिक असमानता

उदाहरण Oxidation की रिपोर्ट के अनुसार 1%.
पोगों के फास 40%. धन डॉ सेट-प्रण

उ) जातिगत व लैंगिक अद्वाव

उदाहरण कार्यक्रमों में अद्विता व मौन उपीड़न

- (2) संवत्सरी के आदर्श की प्राप्ति में व्याप्त सीमाएँ
- ① निजता के अधिकार का हनन
 (उदाहरण) भोजपुर बीड़िया के आह्याय निजी जानकारी सार्वजनिक करना
- ② अधिकारित की आजादी पर 'मुक्तिमुक्त प्रतिवेद्ध' का परिमाणित न होना
 (उदाहरण) अरकार विरोधी वालों पर UAPA का प्रयोग
- (3) सभला के आदर्श की प्राप्ति में व्याप्त सीमाएँ
- ① धर्म व जाहिरत प्रैदमाव
 (उदाहरण) साम्प्रदायिकता, हेट स्पीच
- ② पैदुक पितृसत्तामत्र सीच
 (उदाहरण) PLFS की रिपोर्ट के अनुसार 37% महिला ही गर्भकुप्रेर्ण के आगीदारी
- (4) वर्धुन्त ले आदर्श की प्राप्ति में व्याप्त सीमाएँ
- ① राजनीति और धर्मीकरण
 (उदाहरण) वोट बैंड लेलालव में जनता के धर्म व जाहिर के उत्थान पर क्रियान्वयन करना
- ② साम्प्रदायिकता
 (उदाहरण) अंमीह्या व वावरी अस्तित्व जैरुक्त मुद्दे धार्मिक अस्तित्वों वाले हैं।

उपर्युक्त सीआडो की दूर करने हेतु शुद्ध अंकारों के आहयग से प्रस्तावना के आदर्शों की प्राप्ति में सफलता उर्जित की जा सकती है -

- (1) सोशल अडिपा पर केक न्यूज की प्रसारित करने हेतु जागरूकता का प्रसार
 - (2) 'मुक्ति सुष्ठुप्रति' और संवेदानित शब्दों की व्याख्या
 - (3) स्वतन्त्रता के अधिकार की रक्षा हेतु 'दरा भुरक्षा' सम्बन्धी उपबन्ध
 - (4) वेर बैंड की राजनीति की दूर करने हेतु RPA 1951 में उचित प्रावधान
 - (5) व्याख्यिक विसंब जी दूर करने हेतु व्याख्यिक प्रक्रिया का आघुनिकीयण
- (उदाहरण) SUVAS रूप, ई-कोर्ट सेवा आदि

इस प्रकार 'प्रस्तावना' में वर्णित आदर्शों व्याय, स्वतन्त्रता, समल व ब-धूत्व की प्राप्त कर [एक भारत श्रेष्ठ भारत] के माध्यम आदर्श उपरिल की चरितार्थ कर संवेदानिक उद्देश्यों व मूल्यों की प्राप्त किए जा सकता है,